प्रथम अध्याय

" स्वदेश दीपक व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

प्रथम अध्याय

" स्वदेश दीपक : एक व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

प्रस्तावना :–

हिंदी साहित्य में स्वदेश दीपक जी का अपना एक अलग विशिष्ट स्थान हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा लेकर हिंदी साहित्य में अवतीर्ण हुए हैं। वे बरसों से बड़ी लगन से साहित्य साधना कर रहे हैं। दीपक जी ने बड़ी कुशलता से एक साथ नाटक, कहानी, उपन्यास, संस्मरण तथा टेलीफिल्में आदि साहित्य विधा में लेखन किया हैं। वे बड़ी लगन एवं अनोखी अदासे साहित्य साधना कर रहैं हैं। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण तथ्य मृत्यु हैं। इन्हीं कारणो से तीन दशकों से स्वदेश दीपक जी हिंदी साहित्य में विशिष्ट बन गए हैं। सच तो यह हैं कि उनका रहन–सहन, उनकी मानसिकता और संपूर्ण व्यक्तित्व ही एक ठेठ मध्यमवर्गीय व्यक्ति की तस्वीर प्रस्तुत करता हैं। उनका लिबास एवं अन्दाज निहायत सरल एवं स्वाभाविक हैं जिन को हम बिना देखे ही जान सकते हैं।

रचनाकार का साहित्य उसके अध्ययन, मनन, चिंतन, अनुभवों का निचोड़ होता हैं, जो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक उच्चाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता हैं। रचनाकार के रचना को अच्छी तरह समझने के लिए उनका व्यक्तित्व जानना लाभदायी सिध्द होता हैं। अतः इस अध्याय में रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से स्वदेश दीपक जी को जानने की कोशिश की गयी हैं। जो आज आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य में असाधारण भूमिका निभा रहैं हैं।

1.1. जीवन परिचय :–

1.1.1 जन्म :–

स्वदेश दीपक जी का जन्म पाकिस्तान के रावलपिंडी में 6 अगस्त 1942 में हुआ । इनका परिवार रावलपिंडी के जमींदार परिवारो में से एक था, जो सधन और संपन्न था।

1.1.2 परिवार :–

स्वदेश दीपक जी के पिताजी का नाम दामोदर भारद्वाज और माता का नाम सोमा हैं। दीपक जी के दो छोटे भाई और दो बहने हैं। दोनों भाई शिक्षित हैं। दीपक जी के पिता

जमींदारी किया करते थे। दीपक जी के सधन और संपन्न परिवार को भारत पाकिस्तान बटवारे के बाद राजपूरा, पंजाब में आना पडा।

1.1.3 शिक्षा :–

स्वदेश दीपक जी का बचपन राजपूरा में ही बीता । उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा नई तालिम स्कूल, राजपूरा में हुई । दूसरी जगह से यहाँ आने के कारण दीपक जी के परिवार को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। इसी कारण स्वदेश दीपक जी का बचपन घोर संघर्ष और दारिद्रय में बीता। सधन और संपन्न परिवार के स्वदेश दीपक और उनके परिवार के लोगों को बटवारे के कारण घोर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। नये सीरे से राजपूरा में आकर जिन्दगी शुरू करनी पड़ी । स्वदेश दीपक जी ने कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद पंजाब विश्वविद्यालय, चंदिगड से इंग्लिश में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की । साथ ही उन्होंने हिंदी में भी एम.ए. की उपाधि हासिल की हैं।

1.1.4 व्यवसाय :–

स्वदेश दीपक जी एम.ए. करने के बाद सन 1969 में अंग्रेजी साहित्य के अध्यापक बनें । तब से दीपक जी अध्यापन का कार्य कर रहैं हैं। दीपक जी पिछले 22 सालों से अंबाला के के.जी.एम.एन. कॉलेज में पदव्युत्तर कक्षाओं को अंग्रेजी साहित्य पढ़ा रहैं हैं। विशेष रूप से अंग्रेजी अमेरिकन कविताएँ और नाटक । इनका अध्यापन का कार्य आज भी अविरत शुरू हैं।

1.1.5 विवाह और बच्चे :–

स्वदेश दीपक जी का विवाह अंम्बाला में सन 1973 को श्रीमती गीता जी से हुआ। दीपक जी के दो बच्चे हैं। बेटी का नाम पारूल और बेटे का नाम सुकांत हैं। बेटी पारूल अब ' इंडियन एक्सप्रेस' चंन्दिगड में वरिष्ठ पत्रकारिता हैं तो बेटा सुकांत **free lance** पत्रकार हैं।

1.2. व्यक्तित्व :–

1.2.1 वेशभूषा :–

स्वदेश दीपक की वेशभूषा सीधी–साधी हैं। स्वदेश दीपक खास तौर पर पैन्ट और टी शर्ट पहनना पसंद करते हैं। पैन्ट और टी शर्ट इनका पंसदिदा पोशाख हैं।

1.2.2 आदतें :–

स्वदेश दीपक जी को पढना बहुत अच्छा लगता हैं। अतः खूब सारी पढाई करने की उन्हें आदत हैं। साथ ही सिगरेट बहुत पीते हैं। खाने में दाल या सब्जी पंसद करते हैं।

1.2.3. पुस्तकप्रेमी :–

स्वदेश दीपक जी को पढाई का बहुत शौक हैं। इनका यह शौक बचपन से हैं। स्वदेश दीपक जी लिखते हैं कि जब वे प्राइमरी स्कूल में थे तब वहाँ के अध्यापक श्री. आत्मप्रकाश जी ने उन्हैं साहित्य की महत्ता समझायी थी और तभी से वह पुस्तक और साहित्य से जुड गयें हैं। आज तक वह संबंध बरकरार है ।

1.2.4 गुस्सेल स्वभाव :–

स्वदेश दीपक स्वभाव के बड़े गुस्सेल हैं पर यह गुस्सा अन्याय, अत्याचार और अनैतिकता के विरोध में हैं। इसी की अभिव्यक्ति हम उनके साहित्य में देखते हैं। दीपक जी के नाटक कोर्टमार्शल, सबसे उदास कविता, जलता हुआ रथ आदि अन्याय, अत्याचार और अनैतिकता के विरोध में खडे होने का प्रयास हैं।

1.2.5 सफल अध्यापक :–

स्वदेश दीपक जी सफल अध्यापक रहें हैं। विद्यार्थी उन्हें पूजाभाव से देखते हैं। पिछले करीब तीन दशकों से वह अध्यापन का कार्य कर रहैं हैं। स्वदेश दीपक जी ने अध्यापक का जीवन बिताते हुए अपने आसपास जो देखा, जाना, सहा उसे उन्होंने साहित्य में उद्घाटित किया हैं। उनके साहित्य में इसकी अभिव्यक्ति हम देखते हैं। साहित्य से बचपन से ही गहरी रूचि होने के कारण अध्यापक बनने के बाद यह रूचि बहुत ही फली–फूली। अपने विद्यार्थीओं से उन्हैं अगाध स्नेह और प्यार हैं और विद्यार्थी भी उनसे

स्नेह भाव रखते हैं। वे खुद मानते हैं कि – अध्यापक काम का पक्का होना चाहिए और उसकी नैतिकता मजबूत होनी चाहिए ।

1.2.6 संघर्षशीलता :–

स्वदेश दीपक जी के व्यक्तित्व का एक पहलू संघर्षशीलता भी हैं। बटवारे के बाद रावलपिंडी (पाकिस्तान) से राजपूरा (पंजाब) में आने पर उनके परिवार को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पडा। स्वदेश दीपक जी का बचपन भी घोर संघर्ष और दारिद्रता में बीता हैं। पर उनके संघर्षशील स्वभाव के कारण ही वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सफल अध्यापक बने। इतना ही नहीं हिंदी साहित्य सृजन में दिया हुआ उनका अमूल्य योगदान इसी की देन हैं। जीवन में आनेवाली समस्याओं का उन्होंने डटकर मुकाबला किया हैं। इसकी अभिव्यक्ति हम उनके नाटक में भी देख सकते हैं। उनका हर नाटक किसी न किसी सामाजिक समस्या को न केवल उद्‌घटित करता हैं बल्कि उस समस्या से लडने की शक्ती, हौसला दे नयी किरण भी दिखाता हैं । स्वदेश दीपक के नाटक महज मनोरंजन नहीं बल्कि वास्तव जीवन की समस्याएँ और उनके साथ किये संघर्ष का दस्तावेज हैं।

1.2.7 साहित्यप्रेमी :–

स्वदेश दीपक जी को साहित्य में गहरी रूचि हैं। बचपन से ही साहित्य महत्ता के हुये संस्कार उनमें सदा के लिए रच–बस गयें दिखाई देते हैं। उनके इसी साहित्य के प्रति लगाव ने उन्हें अध्यापक, साहित्यिक और लेखक बना दिया । जब की उनके माता–पिता इन्हें एक सैनिक अफसर देखना चाहते थे। इनकी पहली कहानी ज्ञानोदय, कलकत्ता में 1957 में प्रकाशित हुई थी। जिसका नाम ' सन्तासिंह का बेटा बन्ता सिंह ' था। उन्होंने अपने साहित्य में आम आदमी के जीवन दर्पण को उद्‌घटित किया हैं जिसके जरिए हम आम आदमी के जीवन का पूरा ब्यौरा यथार्थ रूप में देख सकते हैं। साहित्य सृजन स्वदेश दीपक जी के जीवन का अभिन्न अंग हैं। वे खुद लिखते हैं कि मैं जीवन में लिखना ही चाहता हूँ। साहित्य ने मुझे दर्शकों, पाठकों का अगाध स्नेह, मान दिया हैं। इस वक्तव्य से उनके साहित्य के प्रति रूचि, प्रेम को हम समझ सकते हैं।

1.2.8. ट्रेकिंग का शौक :–

स्वदेश दीपक जी को ट्रेकिंग का बहुत शौक हैं; उन्होंने अपने जीवन में इस शौक को बखुबी पूरा भी किया हैं। वह ट्रेकिंग करते हुए गंगा के उदय गौ मुख तक हो आये हैं।

ट्रेकिंग के इस शौक में उनके मजबूत शारीरिक स्वास्थ नें उन्हैं बहुत मदद की हैं। इस शौक से उनके साहसी, जिंदादिल स्वभाव का पता चलता हैं।

1.2.9 सजगता :–

स्वदेश दीपक जी परिस्थितियों के प्रति सजग दिखाई देते हैं। बदलती हुई परिस्थितियाँ, लोगों की वृत्ति में आया परिवर्तन, व्यवस्था में आयी भ्रष्ट राजनीति, इसका मानव जीवन पर पडता बुरा प्रभाव आदि को बडी सजगता से अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया हैं। स्वदेश दीपक जी का उद्देश्य केवल इन परिस्थितियों को अभिव्यक्त करना ही नहीं बल्कि इनसे आम आदमी को सचेत कर संघर्ष के लिए, विरोध के लिए आवाज उठाने के लिए प्रेरित करना भी हैं । वे खुद मानते हैं कि समाज में जो कुछ भी गलत हो रहा हैं लेखक उसके विरोध में खडा होगा। इससे पता चलता हैं कि स्वदेश दीपक जी के अन्दर का लेखक सजग तो हैं ही साथ ही दूसरों को भी सजग करना चाहता हैं।

1.2.10 क्रियाशीलता :–

स्वदेश दीपक जी सन 1969 से अध्यापन कार्य कर रहैं हैं। पिछले 22 सालों से वे जी.एम.एम. कॉलेज अंम्बाला पदव्युत्तर कॅक्षा के छात्रों को अंग्रेजी पढा रहैं हैं साथ ही साहित्य सृजन का कार्य भी करते रहैं हैं । उन्होंने हिंदी के कहानी, उपन्यास, नाटक, टेलिफिल्म आदि विधाओ में साहित्य सृजन किया हैं और आज भी कर रहैं हैं। अपने व्यस्त जीवन से साहित्य सृजन के लिए अपनी क्रियाशील स्वभाव के कारण ही समय निकाल सके हैं। दीपक जी के शीघ्र आनेवाले साहित्य में नाटक ' जजमेंट ' और संस्मरण ' द्वंदित जीवन का कोलाज 'संपूर्ण कहानियाँ आदि हैं। इससे इनके क्रियाशील होने का पता चलता हैं।

1.3 कृतित्व :–

स्वदेश दीपक जी की पहचान प्रमुख रूप से एक कहानीकार हैं तथापि उन्होंने उपन्यास और नाट्य साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। उनके सभी नाटकों का सफल मंचन हो चुका हैं। उनके लिखे नाटक पाठक और श्रोता द्वारा खुब पसंद किये गये हैं । दीपक जी की अनेक कहानीयाँ अत्यंत श्रेष्ठ लगती हैं। दीपक जी द्वारा लिखी ' महामारी ' कहानी पर लघु टेलिफिल्म भी बनी हैं, जो दूरदर्शन पर प्रसारित की गई हैं।

1.3.1 नाटक :–

1) "नाटक बाल भगवान" – प्रथम संस्करण – 1989

2) "कोर्टमार्शल" – प्रथम संस्करण – 1991

3) "काल कोठरी" – प्रथम संस्करण – 1999

4) "जलता हुआ रथ" – प्रथम संस्करण – 1998

5) "सबसे उदास कविता" – प्रथम संस्करण – 1998

1.3.2 कहानी संग्रह :–

1) "अश्वारोही" – प्रथम संस्करण – 1973

2) "मातम" – प्रथम संस्करण – 1978

3) "तमाशा" – प्रथम संस्करण – 1979

4) "बाल भगवान" – प्रथम संस्करण – 1986

5) "प्रतिनिधी कहानियाँ" – प्रथम संस्करण – 1990

6) "किसी अप्रिय घटना का समाचार नहीं" – प्रथम संस्करण – 1991

7) "मसखरे कभी नहीं रोते" – प्रथम संस्करण – 1997

1.3.3 उपन्यास :–

1) "नं. 57 स्क्वाड्रन" – प्रथम संस्करण – 1979

2) "मायापोत" – प्रथम संस्करण – 1985

1.3.4 टैलीफिल्में :–

1) "तमाशा"

2) "महामारी"

3) "तुम कब आओगे"

1.3.5 प्राप्त पुरस्कार :–

1) अश्वारोही को उत्तर प्रदेश राज्य सरकार पुरस्कार प्राप्त ।

2) बाल भगवान को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त ।

3) कोर्टमार्शल को दिल्ली साहित्य कला परिषद पुरस्कार प्राप्त ।

4) कोर्टमार्शल को बंगाल सरकार पुरस्कार प्राप्त ।

5) कोर्टमार्शल को मध्य प्रदेश साहित्य पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ नाटककार और निर्देशक) प्राप्त ।

6) नं. 57 स्क्वाड्रन उपन्यास को पंजाब सरकार पुरस्कार प्राप्त ।

1.3.6 नाटकों का मंचन :–

1.3.6.1 बाल भगवान :–

एम.आर.धीमन निर्देशित आदि मंच द्वारा सन 1989 को प्रथम मंचन अंबाला में झोनल थिएटर फेस्टिवल ऑफ संगीत नाटक ॲकॅडेमी – दिल्ली – सिमला 1982 –24 प्रयोग ।

1.3.6.2 कोर्टमार्शल :–

1) सन 1991 में इस नाटक का प्रथम मंचन साहित्य कला परिषद, दिल्ली की ओर से रंजीत कपूर के निर्देशन में किया गया।

2) "रंगकर्मी ग्रुप " कलकत्ता द्वारा भी उषा गांगुली के निर्देशन में यह मंचित किया गया हैं। इनके द्वारा पूरे भारत देश में 250 प्रयोग हो चुके हैं।

3) अरविंद गौर के निर्देशन में " अस्मिता " ने इसके लगभग 100 प्रयोग किये हैं।

4) अमला राय ने भी अपने निर्देशन में " अभिव्यक्ति " की ओर से लगभग चौबीस प्रयोग किये हैं।

5) बंगला भाषा में अनुवादित करके इस नाटक का मंचन बंगला देश में भी किया गया हैं।

6) पंजाबी में भी अनुवादित करके "केवल धालीवली " द्वारा इसका मंचन किया गया हैं ।

7) नादिरा बब्बर के निर्देशन में भी इसके लगभग 70 प्रयोग हो चुके हैं।

1.3.6.3 जलता हुआ रथ :–

1) सन 1997 में सुरेश वर्मा के निर्देशन में नवंम्बर महिने में दिल्ली में इसका प्रथम मंचन किया गया हैं।

2) राजेंद्र गहलोट द्वारा जयपुर में भी इसका मंचन किया गया हैं।

1.3.6.4 काल कोठरी

1) जून 1997 में इसका प्रथम मंचन अमला राय के निर्देशन में शिमला में किया गया हैं।
2) जावेद खान द्वारा भी सहारंगपुर में इसका मंचन हुआ।
3) राजेंद्र गहलोट ने भी जयपुर में इसका मंचन किया हैं।

1.3.6.5 सबसे उदास कविता :–

1) अरविंद कौर के निर्देशन में दिल्ली में इसका मंचन हुआ हैं।
2) राजेंद्र गहलोट के निर्देशन में भी इसका मंचन किया गया हैं।
3) सहारंगपुर में जावेद खान द्वारा भी इसे मंचित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

रचनाकार का साहित्य उसके अध्ययन, मनन, चिंतन, अनुभवों का निचोड होता हैं जो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक उचाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता हैं। अतः मैंने प्रथम अध्याय में स्वदेश दीपक जी के जीवन का परिचय दिया हैं।

स्वदेश दीपक ' व्यक्तित्व एवं कृतित्व ' पर दृष्टिपात करने पर मेरा यह निष्कर्ष हैं कि दीपक जी का जन्म रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ। बटवारे के कारण उनके परिवार को राजपूरा (पंजाब) में आना पड़ा। दीपक जी का बचपन घोर संघर्ष और दरिद्रता में बीता। अपने संघर्षशील स्वभाव के कारण वे सफल अध्यापक बने। संघर्ष, दारिद्रय तथा सामाजिक विषमता को नजदीक से देखने तथा अनुभव करने से उनका नाटक साहित्य यर्थाथ और वास्तव जीवन की अभिव्यक्ति लगता हैं तथा पाठक के हृदय को छू लेने की क्षमता रखता हैं। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण तथ्य मृत्यु हैं। उन्होंने नाटक के साथ–साथ उपन्यास, कहानी, टेलिफिल्म, संस्मरण आदि विधाओं में भी लेखन किया हैं इससे उनकी बहुविध प्रतिभा का पता चलता हैं। दीपक जी आधुनिक काल के हिंदी नाट्य सृष्टि के सशक्त नाटककार हैं। उनके सभी नाटकों का सफलता से मंचन हो चुका हैं। हिंदी साहित्य निर्माण के क्षेत्र में दीपक जी का विशिष्ट स्थान बन गया हैं जो अपनी एक अलग पहचान रखता हैं। उनकी यह पहचान पाठकों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती ।